समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०१४ ● वर्ष : १७ ● अंक : १२ (निरंतर अंक : २०४)

मासिक समाचार पत्र

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

सद्गुरु साँईं
श्री लीलाशाहजी महाराज

महर्षि वेदव्यासजी

जिन्होंने गुरु का ज्ञान पचाया है वे समत्व योग में स्थित होकर सम और निर्लिप्त रहते हैं । फिर उन्हें संसार की परिस्थितियाँ चलायमान नहीं कर सकतीं । ऐसे ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का पर्व है **गुरुपूर्णिमा** ।

गुरुपूर्णिमा विशेषांक

साधक के लिए गुरुपूर्णिमा एक व्रत और तपस्या का दिन है। उस दिन साधक को चाहिए कि उपवास रखकर गुरु के द्वार जा के गुरु-दर्शन, गुरुसेवा करे और गुरु-सत्संग का श्रवण करे। उस दिन गुरुदेव की पूजा करने से वर्षभर की पूर्णिमाओं के दिन किये हुए सत्कर्मों के पुण्य का फल मिलता है। गुरुपूर्णिमा के दिन ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु के संकेत के अनुसार आचरण करें।

तू मुझे अपना उर आँगन दे दे, मैं अमृत की वर्षा कर दूँ।

गुरु उर-आँगन माँगें तो दे दो। अपनी मान्यताएँ और अहं को हृदय से निकालकर गुरु के चरणों में अर्पण कर दो। गुरु उसी हृदय में सत्यस्वरूप प्रभु का रस छलका देंगे। गुरु के द्वार पर अहं लेकर जानेवाला व्यक्ति गुरु के ज्ञान को पचा नहीं सकता, हरि के प्रेमरस को चख नहीं सकता।

अपने संकल्प के अनुसार गुरु को मत चलाओ लेकिन गुरु के संकल्प में अपना संकल्प मिला दो तो बेड़ा पार हो जायेगा।

नम्र भाव से, कपटरहित हृदय से गुरु के द्वार जानेवाला ऐसा पाता है कि आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक - तीनों सम्पदाओं के द्वार खुल जाते हैं।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।' (गीता : ४.३४)

जो शिष्य सद्गुरु का पावन सान्निध्य पाकर आदर व श्रद्धा से सत्संग सुनता है, सत्संग-रस का आस्वादन करता है, उस शिष्य का प्रभाव अलौकिक होता है।

'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में भी शिष्य के लक्षण के संबंध में श्री वसिष्ठजी महाराज कहते हैं :

''जिस शिष्य को गुरु के वचनों में श्रद्धा, विश्वास और सद्भावना होती है, उसका कल्याण अति शीघ्र होता है।''

शिष्य को चाहिए कि गुरु, इष्ट, आत्मा और मंत्र - इन चारों में ऐक्य देखे। श्रद्धा रखकर दृढ़ता से आगे बढ़े।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शिष्यों का अनुपम पर्व : गुरुपूर्णिमा

- पूज्य बापूजी

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी,ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक :१२
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक :२०४)
१५ जून २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स,कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :

(१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :

(१) पंचवार्षिक : US $ 50
(२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती,अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन :(०७९) ३९८७७७३९/८८,
२७५०५०१०/११.

e-mail :1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में

- शिष्यों का अनुपम पर्व : गुरुपूर्णिमा २
- निंदा की आँधी में भी वे सदा जगमगाते हैं ४
- क्षमा के सागर सद्गुरु ६
- सत्शिष्य के लक्षण - स्वामी शिवानंदजी सरस्वती ८
- जब महावीर स्वामी के करुणा के आँसू छलक पड़े... - श्री आर.एन. ठाकुर ९
- यम और नियमों के पालन से भी बढ़कर है गुरुसेवा १०
- साधना का मर्म व रीति ११
- जानिये कुछ खास खबरें १२
- जोधपुर केस की अदालती गतिविधियाँ १२
- वेदांत पर प्रबंध - श्री इन्द्र सिंह राजपूत १३
- फिजूल समय क्यों बरबाद कर रहे हो ? १४
- 'बाल संस्कार केन्द्र' में मनायें गुरुपूर्णिमा महोत्सव १४
- शिष्यों के प्रकार १५
- सुख-शांति व बरकत के उपाय १५
- ट्विटर पर पूज्य बापूजी को समर्थन १५
- राष्ट्र-धरोहर गंगा को बचाने की दिशा में एक प्रयास १६
- बथुआ खायें, रोग भगायें १५
- बेसहारों के सहारा हैं बापूजी १८
- सरल प्रयोग १८
- आत्महत्या महापाप १९
- ऐसे महापुरुषों की तुलना किससे करोगे ? २०
- संत वाणी २१
- पूज्य बापूजी व पवनाहारी बाबा २२

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

सुदर्शन NEWS
रोज सुबह ६.३० बजे

मंगलमय
www.ashram.org पर उपलब्ध

निंदा की आँधी में भी वे सदा जगमगाते हैं

-पूज्य बापूजी

जब कोई दीया जलता है तो आँधी-तूफान उसको बुझाने में लगते हैं, ऐसे ही जब-जब धरती पर महापुरुष आते हैं, तब-तब निंदकरूपी आँधी-तूफान भी आये । निंदक लोग विवेकानंदजी के लिए कुछ-का-कुछ बकते थे, स्वामी रामतीर्थ के लिए कुछ-का-कुछ लिखते थे लेकिन वे दीये तो जगमगाते रहते हैं, औरों को रोशनी देते जाते हैं । इसी कारण अभी भी समाज में जो आनंद, मौज, माधुर्य और भगवद्रस छलकता है, वह उन त्यागी पुरुषों का, हिम्मतवाले साहसी महापुरुषों का ही तो प्रसाद है ।

महात्मा बुद्ध गालियाँ सहते हैं । संत तुकाराम महाराज को निंदक उलटे मुँह गधे पर बैठाते हैं और गाँव में उनको घुमाते हैं । सुकरात को जहर दिया गया, ऋषि दयानंद को भी न जाने कितनी बार जहर दिया गया । ऋषि दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, कबीरजी आदि संतों को निंदकों ने सताने का प्रयास किया । यह तो इस दुष्ट युग, कलियुग की बात है लेकिन रामराज्य में वसिष्ठजी महाराज कहते हैं कि 'हे रामजी ! मूर्ख लोग मेरे लिए क्या-क्या बोलते हैं, हँसते हैं, मेरे को सब पता है लेकिन मैं उन्हें क्षमा करता हूँ । कैसे भी हों वे संसाररूपी कीचड़ से निकलें ।' राजा दशरथ जिनकी चरणरज लेकर अपना भाग्य बनाते हैं, रामचन्द्रजी जिनको प्रणाम करके अपना आदर्श व्यक्त करते हैं, ऐसे वसिष्ठजी के लिए भी कुछ लोग कुछ-की-कुछ अफवाह कर सकते हैं तो तुम्हारे लिए कोई कुछ बोले तो तुम फिक्र मत करना । **तुम्हारे सद्गुरु के लिए कोई कुछ बोले तो उनके चक्कर में मत आना, तुम तो चौरासी के चक्कर को हटाकर आत्मस्थ होना, यही तुम्हारा उद्देश्य हो ।**

(मुखपृष्ठ २ से 'शिष्यों का अनुपम पर्व : गुरुपूर्णिमा' का शेष)

अहं और मन को गुरु के चरणों में समर्पित करके, शरीर को गुरु की सेवा में लगाकर गुरुपूर्णिमा के इस शुभ पर्व पर शिष्य को एक संकल्प अवश्य करना चाहिए : 'इन्द्रिय-विषयों के लघु सुखों में, बंधनकर्ता तुच्छ सुखों में बह जानेवाले अपने जीवन को बचाकर मैं अपनी बुद्धि को गुरुचिंतन में, ब्रह्मचिंतन में स्थिर करूँगा।'

बुद्धि का उपयोग बुद्धिदाता को जानने के लिए ही करें । आजकल के विद्यार्थी बड़े-बड़े प्रमाणपत्रों के पीछे पड़ते हैं लेकिन प्राचीनकाल में विद्यार्थी संयम-सदाचार का व्रत-नियम पालकर वर्षों तक गुरु के सान्निध्य में रह के बहुमुखी विद्या उपार्जित करते थे। भगवान श्रीराम वर्षों तक गुरु वसिष्ठजी के आश्रम में रहे थे । वर्तमान का विद्यार्थी अपनी पहचान बड़ी-बड़ी पदवियों से देता है जबकि पहले के शिष्यों में पहचान की महत्ता वह किसका शिष्य है उस पर से होती थी । आजकल तो संसार का कचरा खोपड़ी में भरने की आदत हो गयी है । यह कचरा ही मान्यताएँ, कृत्रिमता तथा राग-द्वेषादि बढ़ाता है और अंत में ये मान्यताएँ ही विषय-विकारों और अहंकार को बढ़ावा देती हैं और दुःख में धकेलती हैं । अतः साधक को चाहिए कि वह सदैव जागृत रहकर सत्संग के वातावरण में, आत्मज्ञानी महापुरुषों के सान्निध्य में रह के परम तत्त्व परमात्मा को पाने का परम पुरुषार्थ करता रहे।

संसार आँख और कान द्वारा अंदर घुसता है । जैसा सुनोगे वैसे बनोगे तथा वैसे ही संस्कार बनेंगे । जैसा देखोगे वैसा स्वभाव बनेगा । जो साधक सदैव आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष को ही देखता-सुनता है, उसके हृदय में बसा हुआ महापुरुषत्व भी देर-सवेर जागृत हो जाता है।

रानी मदालसा ने अपने बच्चों में ब्रह्मज्ञान के संस्कार भर दिये थे । छः में से पाँच बच्चों को छोटी उम्र में ही ब्रह्मज्ञान हो गया था । ब्रह्मज्ञान का सत्संग काम, क्रोध, लोभ, राग, द्वेष, आसक्ति और दूसरी सब बेवकूफियाँ छुड़ाता है, कार्य करने की क्षमता बढ़ाता है, बुद्धि सूक्ष्म बनाता है तथा भगवद्ज्ञान में स्थिर करता है । ज्ञानवान के शिष्य के जितना अन्य कोई सुखी नहीं है और वासनाग्रस्त मनुष्य के जितना अन्य कोई दुःखी नहीं है । इसलिए साधक को गुरुपूनम के दिन गुरु के द्वार जाकर सावधानीपूर्वक सेवा करके, सत्संग का अमृतपान करके अपना असली जीवन जगाना चाहिए।

राग-द्वेष छोड़कर गुरु की गरिमा को पाने का पर्व माने गुरुपूर्णिमा । गुरुपूर्णिमा तपस्या का भी द्योतक है । ग्रीष्म के ताप से ही खट्टा आम मीठा होता है । अनाज भी सूर्य की गर्मी से ही परिपक्व होता है । ग्रीष्म की गर्मी ही वर्षा का कारण बनती है । इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि के मूल में तपस्या निहित है । अतः साधक को भी जीवन में तितिक्षा, तपस्या को महत्त्व देना चाहिए । सत्य, संयम और सदाचार के तप से अपनी आंतर चेतना खिल उठती है, जबकि ज्यादा सुख-सुविधा और भोग-विलास करनेवाला मनुष्य अंदर से खोखला हो जाता है । व्रत-नियम से इन्द्रियाँ तपती हैं तो अंतःकरण निर्मल बनता है और मन अमन बनता है । चतुर्मास का आरम्भ इसी काल में होता है । इस चतुर्मास को तपस्या का समय बनायें । जप, श्री योगवासिष्ठ का पारायण, एक समय भोजन, अनुष्ठान, ब्रह्मचर्य व्रत - ऐसा कोई-न-कोई नियम ले लो । पुण्याई जमा करो । परिस्थिति, मन तथा प्रकृति बदलती रहे फिर भी अबदल रहनेवाला अपना जो ज्योतिस्वरूप है, उसे जानने के लिए तत्पर बनो । जीवन में से गलतियों को चुन-चुनकर निकालो । की हुई गलती को फिर से न दुहराओ। दिल में बैठे हुए दिलबर का ज्ञान न पाना यह बड़े-में-बड़ी गलती है । गुरुपूर्णिमा का व्रत इसी गलती को सुधारने का व्रत है।

क्षमा के सागर सद्गुरु

एक महात्मा हो गये - स्वामी राम (स्वामी रामतीर्थ नहीं, दूसरे संत थे)। उनके गुरु बड़े उच्च कोटि के संत थे। स्वामी राम ने अपनी आत्मकथा में लिखा है :

'प्रायः बच्चों में स्वार्थ-परायणता देखी जाती है, वे अन्य बालकों को कुछ भी नहीं देना चाहते लेकिन मुझे बचपन में ही सब कुछ दे देने की, स्वार्थरहित सेवा करने की सुंदर शिक्षा मिली अपने पूज्य गुरुदेव से।

उन दिनों मैं पर्वतों में निवास करता था और दिन में सिर्फ एक बार भोजन करता था। एक रोटी, थोड़ा साग और एक गिलास दूध यही मेरा भोजन था।

एक दिन दोपहर को हाथ-पैर धोकर भोजन करने बैठा। ब्रह्मार्पण करके भोजन प्रारम्भ करने ही वाला था कि गुरुदेव आकर बोले : ''कुछ देर रुक जाओ।''

मैंने कहा : ''आज्ञा करें गुरुदेव !''

''एक वृद्ध महात्मा आये हैं, उन्होंने कई दिनों से भिक्षा नहीं की है। तुम अपना भोजन उन्हें सहर्ष समर्पित कर दो।''

''मैं क्यों दूँ ! मैं भी तो भूखा हूँ और मुझे कल इसी समय भोजन मिलेगा।''

गुरुदेव मेरे इस व्यवहार से कुपित नहीं हुए बल्कि मुझे समझाते हुए बोले : ''तुम मरोगे नहीं, उन्हें भोजन दे दो किंतु इसलिए न दो कि यह मेरी आज्ञा है बल्कि श्रद्धा-भाव से भरकर दो।''

''मैं भूख से क्षुब्ध हूँ। मेरे हृदय में उनके प्रति श्रद्धा कैसे उत्पन्न हो सकती है, जो मेरे लिए परोसा हुआ भोजन ग्रहण करना चाहते हैं ?''

जब कई बार कहने के पश्चात् भी गुरुदेव मुझे न समझा सके तो बोले : ''मैं तुम्हें स्वामीजी को अपना भोजन समर्पित करने की आज्ञा देता हूँ।''

महात्मा भीतर आये, वे अति वृद्ध थे । वे अकेले ही पर्वत-मालाओं में भ्रमण करते थे । वे महान त्यागी व विरक्त महापुरुष थे ।

गुरुदेव ने महात्माजी का स्वागत करते हुए कहा : ''मुझे अपार हर्ष है कि आप यहाँ पधारे । कृपा करके इस बच्चे को आशीर्वाद दीजिये ।''

मैंने उखड़े स्वर में कहा : ''मुझे आशीर्वाद की आवश्यकता नहीं है, मुझे भोजन चाहिए ।''

इतना उद्दंडतापूर्ण उत्तर सुनने पर भी गुरुदेव मुझसे प्यार से बोले : ''बेटा ! यदि तुम इन निर्बल क्षणों में अपना आत्मसंयम खो बैठे तो जीवन-समर में कभी भी विजय प्राप्त नहीं कर पाओगे । जाओ, जल देकर स्वामीजी के पैर धोओ और भोजन कराओ ।''

गुरुदेव की आज्ञानुसार मैंने वैसा ही किया किंतु मुझे यह रुचिकर न लगा और न ही मैं इसका मंतव्य समझ पाया ।

मैंने महात्माजी के चरण पखार के उन्हें भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना की । बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि वे चार दिनों से भूखे थे ।

महात्माजी ने भोजन किया, प्रसन्न होकर बोले : ''ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रखे बेटा ! जा, तुझे भूख कभी भी नहीं सतायेगी जब तक भिक्षा तेरे सामने प्रस्तुत न हो ! यह मेरा आशीर्वाद है ।''

उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं । उस दिन से रात-दिन सताती हुई क्षुधा से मुझे मुक्ति मिली जो मुझे छिछोरा व्यवहार करने को बाध्य करती थी ।

उस दिन गुरुदेव ने मुझे निःस्वार्थता का पाठ पढ़ाया । निःस्वार्थ कर्मों को करने में जो सर्वोच्च सुखानुभूति होती है, आत्मज्ञान की उपलब्धि में वह एक आवश्यक सोपान है । क्योंकि स्वार्थी व्यक्ति ज्ञान की इस अवस्था की कभी कल्पना तक नहीं कर सकता ।'

स्वामी राम का यह जीवन-प्रसंग हमें बताता है कि शिष्य का परम मंगल किसमें है यह तो सद्गुरु ही जानते हैं और करते भी हैं, भले ही शिष्य की अल्प मति में मन-बुद्धि से पार परमात्मा से एकाकार हुए गुरुदेव की लीला समझ में न आये । गुरुदेव कितने करुणावान होते हैं ! शिष्य के प्रतिकूल व्यवहार को भी वे क्षमा कर देते हैं और उसका कल्याण कैसे हो वही करते हैं । ऐसे सद्गुरुओं की महिमा का वर्णन लेखनी में आ ही नहीं सकता । गुरुदेव क्षमा के सागर तो शिष्य गलतियों का ढेर होता है, फिर भी गुरुदेव करुणा करके उसे तराशकर नायाब हीरा बना देते हैं ।

पुण्यदायी तिथियाँ

८ जुलाई : चतुर्मास व्रतारम्भ

९ जुलाई : देवशयनी एकादशी (पापों को हरनेवाला, महान पुण्यमय तथा स्वर्ग व मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत)

१२ जुलाई : गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा, संन्यासी चतुर्मास आरम्भ, ऋषि प्रसाद जयंती

१५ जुलाई : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से रात्रि २-३० तक)

१६ जुलाई : संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

२२ जुलाई : कामिका एकादशी (व्रत व रात्रि-जागरण से भयंकर यमदूत व दुर्गति से बचानेवाला तथा पूरी पृथ्वी के दान का फल देनेवाला व्रत)

२४ जुलाई : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (रात्रि ११-५५ से २५ जुलाई दोपहर १२-२७ तक, ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

२७ जुलाई : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से शाम ६-०५ तक)

१ अगस्त : नाग पंचमी (नाग पूजन)

३ अगस्त : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से शाम ६-११ तक)

सत्शिष्य के लक्षण

– स्वामी शिवानंदजी सरस्वती

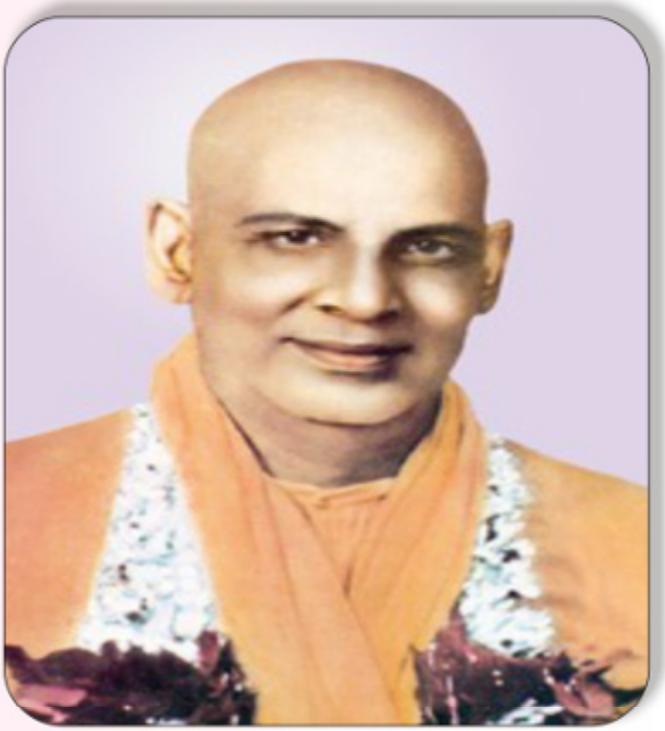

यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः प्रकाशन्ते महात्मन इति ॥

'जिस साधक की परमात्मा में अत्यंत भक्ति है तथा जैसी परमात्मा में है, वैसी ही गुरु में भी है, उस महान आत्मा के हृदय में ही ये बताये गये गूढ़ ज्ञान प्रकाशित होते हैं, ऐसे महात्मा में ही (यह उपनिषद्) ज्ञान प्रकाशित होते हैं।'

(श्वेताश्वतर उपनिषद् : ६.२३)

शिष्य वह है जो गुरु के उपदेशों का अक्षरशः तथा भावशः पालन करता है तथा उनकी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार अपने से कम विकसित जीवात्माओं में आजीवन करता रहता है।

वास्तविक शिष्य केवल गुरु के दिव्य स्वरूप से ही संबंध रखता है। गुरु जो मानव होने के नाते कार्य करते हैं, उनकी वह चिंता नहीं करता। वह इस ओर पूर्ण विस्मरणशील-सा रहता है । उसके लिए गुरु 'गुरु' हैं। यह सदा स्मरण रखें कि संत का स्वरूप अतलस्पर्शी होता है । उनके विषय में अपना कोई मत न बनाइये। अपनी अज्ञानता के अक्षम मापदंड से उनके दिव्य स्वरूप को न मापिये । व्यापक दृष्टिकोण से सम्पादित अपने गुरु के कार्यों की आलोचना न कीजिये।

गुरु विशुद्ध शिष्यत्व-दृष्टि का उन्मीलन करते हैं। वे शिष्य की आध्यात्मिक अग्नि प्रज्वलित तथा प्रसुप्त क्षमताओं को उद्बोधित करते हैं । यह आध्यात्मिक पथ की यात्रा में सर्वाधिक आवश्यक पाथेय है । गुरु तथा शिष्य एक बन जाते हैं । गुरु शिष्य को आशीर्वाद देते हैं, उसका पथप्रदर्शन करते हैं तथा उसे प्रेरणा देते हैं। वे शिष्य में शक्ति-संचार करते हैं, उसे रूपांतरित करते हैं तथा आध्यात्मिक बनाते हैं।

*** हम जितना महत्त्व संसार को देते हैं, उतना महत्व अगर ईश्वर को दें तो सचमुच फिर देर नहीं है, आप ईश्वर हैं ही।**

जब महावीर स्वामी के करुणा के आँसू छलक पड़े...

जैसे हर संत के जीवन में देखा जाता है, वैसे महावीर स्वामी के समय भी जहाँ उनसे लाभान्वित होनेवाले लोग थे, वहीं समाजकंटक निंदक भी थे।

उनमें से पुरंदर नाम का निंदक बड़े ही क्रूर स्वभाव का था। वह तो महावीरजी के मानो पीछे ही पड़ गया था। उसने कई बार महावीर स्वामी को सताया, उनका अपमान किया पर संत ने उसे माफ कर दिया। एक दिन महावीर स्वामी पेड़ के नीचे ध्यानस्थ बैठे थे। तभी घूमते हुए पुरंदर भी वहाँ पहुँच गया। वह महावीरजी को ध्यानस्थ देख आग-बबूला होकर बड़बड़ाने लगा : ''अभी इनका ढोंग उतारता हूँ। अभी मजा चखाता हूँ...'' और आवेश में आकर उसने एक लकड़ी ली और उनके कान में खोंप दी। कान से रक्त की धार बह चली लेकिन महावीरजी के चेहरे पर पीड़ा का कोई चिह्न न देखकर वह और चिढ़ गया, और कष्ट देने लगा। इतना सब होने पर भी महावीरजी किसी प्रकार की कोई पीड़ा को व्यक्त किये बिना शांत ही बैठे रहे। परंतु कुछ समय बाद अचानक उनका ध्यान टूटा, उन्होंने आँख खोलकर देखा तो सामने पुरंदर खड़ा है। उनकी आँखों से आँसू झरने लगे। पुरंदर ने पूछा : ''क्या पीड़ा के कारण रो रहे हो ?''

महावीर स्वामी : ''नहीं, शरीर की पीड़ा के कारण नहीं।''

पुरंदर : ''तो किस कारण रो रहे हो ?''

''मेरे मन में यह व्यथा हो रही है कि मैं निर्दोष हूँ फिर भी तुमने मुझे सताया है तो तुम्हें कितना कष्ट सहना पड़ेगा ! कैसी भयंकर पीड़ा सहनी पड़ेगी ! तुम्हारी उस पीड़ा की कल्पना करके मुझे दुःख हो रहा है।''

यह सुन पुरंदर मूक हो गया और पीड़ा की कल्पना से सिहर उठा।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जो दुःसंकल्प करता है और उसे क्रियान्वित करते समय भी पश्चात्ताप नहीं करता, दुःखी नहीं होता, वह दुःसंकल्प और दुष्क्रिया का जब फल भोगता है तब दुःखी होता है, जब नरक मिलता है तब दुःखी होता है। **अतः गलती करते समय ही रोइये, गलती के संकल्प के समय ही सावधान रहिये।**''

पुरंदर की नाईं गोशालक नामक एक कृतघ्न गद्दार ने भी महावीर स्वामी को बहुत सताया था। महावीरजी के ५०० शिष्यों को उनके खिलाफ खड़ा करने का उसका षड्यंत्र भी सफल हो गया था। उस दुष्ट ने महावीर स्वामीजी को जान से मारने तक का प्रयत्न किया लेकिन जो जैसा बोता है उसे वैसा ही मिलता है। धोखेबाज लोगों की जो गति होती है, गोशालक का भी वही हाल हुआ।

अतः निंदको व कुप्रचारको ! अब भी समय है, कर्म करने में सावधान हो जाओ। अन्यथा जब प्रकृति तुम्हारे कुकर्मों की तुम्हें सजा देगी उस समय तुम्हारी वेदना पर रोनेवाला भी कोई न मिलेगा।

– श्री आर.एन. ठाकुर

यम और नियमों के पालन से भी बढ़कर है गुरुसेवा

सच्चे शिष्य के हृदय में सद्गुरु के प्रति कैसा प्रेम होता है उसके बारे में भगवान श्रीकृष्ण ने जो बताया है, उस पावन प्रेम की रसधार का वर्णन करते हुए श्री एकनाथजी महाराज कहते हैं :

यमानभीक्ष्णं सेवेत नियमान् मत्परः क्वचित् ।
मदभिज्ञं गुरुं शान्तमुपासीत मदात्मकम् ॥
(श्रीमद् भागवत : ११.१०.५)

'अहिंसा आदि यमों का तो आदरपूर्वक सेवन करना चाहिए परंतु शौच (पवित्रता) आदि नियमों का पालन शक्ति के अनुसार और आत्मज्ञान के विरोधी न होने पर ही करना चाहिए। **जिज्ञासु पुरुष के लिए यम और नियमों के पालन से भी बढ़कर आवश्यक बात यह है कि वह अपने गुरु, जो मेरे स्वरूप को जाननेवाले और शांत हों, उनकी मेरा ही स्वरूप समझकर सेवा करे।'**

अहिंसा, सत्य आदि का आचरण करते समय शिष्य की स्थिति इतनी उज्ज्वल हो जाती है कि उसकी गुरुभक्ति पर अटूट श्रद्धा हो जाती है, दिन-रात वह गुरु का ही चिंतन करने लगता है क्योंकि उपनिषद् में अंतिम निर्णय के रूप में वचन है कि सद्गुरु के बिना कभी भी ब्रह्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

जैसे आँखों से अच्छी तरह दिखायी देता है लेकिन यदि उसे सूर्य व प्रकाश की सहायता न हो तो सामने की वस्तु नहीं दिखायी देगी तथा जिस प्रकार नौका 'महान-महान' लोगों को भी पार कराती है लेकिन यदि केवट न हो तो इन 'महान लोगों' को इधर से उधर जाना सम्भव नहीं होगा। और जैसे सहसा कोई रत्न दिखायी देता है तो मन में यह संदेह उठता है कि वह असली है या नकली है ? फिर जब रत्न-परीक्षक उसकी कीमत लगाता है, तब कहीं उसे प्राप्त करने के लिए लोग प्रयास करते हैं। ठीक उसी प्रकार आत्मस्वरूप तो नित्यप्राप्त है लेकिन साधक श्रद्धापूर्वक सद्गुरु के द्वारा उस पर छाये मलिन संस्कारों का आवरण हटवा के आत्मज्ञान पाकर आत्मसुख को प्राप्त होते हैं।

आत्मज्ञान सम्पादन करने के लिए सद्गुरु की सेवा करके संत व सज्जन शांत होते हैं क्योंकि सद्गुरु आत्मसुख-शांति में शांत होते हैं। तुम कहोगे कि जो अनेक साधन किये उनमें गुरु भी एक साधन होंगे लेकिन यही बात अगर मुमुक्षु कहता है तो वह मूर्ख कहलायेगा। उसका निजात्मसुख डूब जायेगा। 'सद्गुरु साधनरूप हैं और साध्य उनसे अलग है' - यह कहने से वह पूरी तरह लुट जायेगा। जो चित्सुख से सदा सम्पन्न है, जिसे चित्स्वरूप आत्मा से समाधान प्राप्त होता है वह चिन्मात्र आत्मा से कभी भी अलग नहीं रह सकता। जैसे नमक जब समुद्र में पड़ता है, तभी वह समुद्र कहलाता है। दीप जब दावाग्नि (जंगल में लगी आग) को आलिंगन करता है, तभी वह तेज दावाग्नि बनकर रहता है; उसी प्रकार जिसे चिद्रूप परमात्मा का ज्ञान होता है वह पूर्ण

(शेष पृष्ठ १७ पर)

साधना का मर्म व रीति

संत दादू दयालजी की दो शिष्याएँ थीं - नानी बाई और माता बाई । दोनों विवेक-वैराग्य की धनी तथा साधनासम्पन्न थीं । गुरु-प्रसाद से उनका हृदय पावन हो चुका था । संयम, सदाचार वाले उनके पवित्र जीवन में दादूजी के सत्संग से ज्ञान-प्रकाश का उदय हो गया था ।

एक बार उन सत्शिष्याओं को देखकर राजा भगवंतदास सोच में पड़ गया कि 'इस युवावस्था में इतना वैराग्य ! कोई विकारी आकर्षण नहीं ! इनकी विलक्षण आत्मतृप्ति व आत्मसंतुष्टि का आखिर क्या रहस्य है ? ये कौन-सी साधना करती हैं ?' कौतूहलवश उसने पूछ ही लिया : ''हे सत्शिष्याओ ! आपकी साधना की रीत क्या है, सच्ची साधना का मर्म क्या है ?''

तब उन बहनों ने कहा : ''हे राजन् ! पहले से तैयार किये नक्शे के अनुसार तो मकान ही बना सकते हैं, पेड़-पौधे नहीं उगा सकते । वे तो स्वाभाविक, सहज रीति से ही उगते हैं । **नक्शा हुक्म इमारत चले, वृक्ष चले निजलीला ।**

वैसे ही साधना और जीवन का नक्शा भी तैयार नहीं होता, यह तो गुरुकृपा से ही अपनी सहज गति से पनपता और विकसित होता है ।

राजन् ! साधना की रीति गुरुआज्ञा-पालन में निहित है और साधना का मर्म गुरुकृपा में है । ईश्वर की कृपा जिन पर होती है, उन्हें ही सद्गुरु मिलते हैं और जिन्हें सद्गुरु मिल जायें उन्हें साधना करनी नहीं पड़ती, उनकी साधना सहज में होने लगती है ।''

यही बात संत कबीरजी ने भी कही है :

साधो भाई ! सहज समाधि भली ।
गुरु प्रताप भयो जा दिन ते,
दिन दिन अधिक चली ॥

मनमाने ढंग से इधर-उधर की किताबें पढ़ के साधना करने से काम नहीं बनता । वास्तव में साधना फलित तभी होती है, उसमें ब्रह्मसुख के फल तभी लगते हैं, जब सद्गुरुरूपी सूर्य की कृपा-किरणें उस साधकरूपी पौधे को पोषित करती हैं ।

पूज्य बापूजी साधकों को साधना का सूक्ष्म मर्म समझाते हुए कहते हैं :

''**गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम् ।**

साधारण मंगल तो आपकी पूजा से, तप से, व्रत से आप कर लोगे थोड़े दिन लेकिन जो साधना से बनेगा वह असाधन से मिटेगा । जो उपजेगा वह नाश हो जायेगा । यहाँ उपजाना नहीं है, केवल जानना है । और **यह फल साधन ते न होई ।** मनमानी से १२ साल किसी गुफा में घुस के बैठो तो भी ज्ञान न होगा । अनुभूति तो... जले हुए दीये के सम्पर्क में आने से ही हमारा दीया जलेगा ।

मैं १२ साल तपस्या करता तो इतना नहीं मिलता जितना उस शहंशाह (पूज्य बापूजी के सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) ने दे डाला । जिसको ब्रह्मज्ञानी गुरु की छाया नहीं है, वह चाहे ६० हजार वर्ष तपस्या कर ले, सोने की लंका पा ले फिर भी बबलू है और ब्रह्मज्ञानी गुरु मिल गये तो ४० दिन के अनुष्ठान से 'आसुमल' में से 'आशाराम बापू' हैं...''

अतः सद्गुरु की सच्ची शरणागति ही सब साधनाओं का सार, मर्म व रीति है ।

जानिये कुछ खास खबरें

नपुंसकता बढ़ा रहे हैं टूथपेस्ट, साबुन

सावधान ! साँसों में सनसनाती ताजगी लानेवाले टूथपेस्ट, स्किन लोशन, रंग-बिरंगे साबुन और प्लास्टिक के खिलौनों जैसी चीजें पुरुषों को नपुंसक बना सकती हैं । डेनमार्क की कोपेनहेगेन यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में हुए अध्ययन के अनुसार दैनिक उपयोग में आनेवाली उपरोक्त चीजों में मौजूद हर तीन रसायनों में से एक रसायन पुरुषों के शुक्राणुओं को बुरी तरह प्रभावित करता है । 'द इएमबीओ जर्नल' में प्रकाशित 'यूरोपियन सेंटर ऑफ एडवांस स्टडीज एंड रिसर्च' की खोज के अनुसार रोजमर्रा में उपयोग होनेवाले उत्पादों में मौजूद ९६ में से ३० रसायनों का प्रभाव शुक्राणुओं की क्षमता पर पड़ता है।

आयुर्वेदिक उत्पादों एवं प्राकृतिक उपचारों का उपयोग उपरोक्त महँगे उत्पादों एवं उनमें मौजूद रसायनों के दुष्प्रभाव से बचने का बेहतर विकल्प है, जो सस्ता भी है।

जंक फूड पर पाबंदी

अब विद्यालयों की कैंटीन (स्वल्पाहारगृह) में जंक फूड (बर्गर, पिज्जा आदि फास्टफूड) देखने को भी नहीं मिलेगा। दरअसल स्कूल कैंटीनों में जंक फूड पर प्रतिबंध लगाने के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गांधी ने एक प्रस्ताव तैयार किया है । इसका उद्देश्य बच्चों को कैंटीन में बेहतर गुणवत्ता का भोजन उपलब्ध कराना है। बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह अति महत्त्वपूर्ण कदम है । इसके लिए मेनका गांधी धन्यवाद की पात्र हैं।

अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध

चीन में ऑनलाइन अश्लीलता के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत हाल ही में लगभग ४२२ वेबसाइटों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है तथा सोशल नेटवर्किंग साइट के ५ हजार से अधिक एकाउंट बंद करवा दिये गये हैं। चीन का यह कदम अन्य देशों के लिए प्रेरणाप्रद है।

सिगरेट नहीं खरीद सकेंगे युवा

न्यूयॉर्क में अब २१ साल से कम उम्र के लोग सिगरेट नहीं खरीद सकेंगे। वहाँ छोटी-छोटी दुकानों के प्रवेश द्वार पर भी चेतावनी लगा दी गयी है : '२१ साल से नीचे के लोगों को तम्बाकू निषेध ।' युवा पीढ़ी को बरबादी से रोकने के लिए उठाया गया यह कदम सराहनीय है।

जोधपुर केस की अदालती गतिविधियाँ

(१३ जून तक की जानकारी)

(१) आरोप लगानेवाली लड़की के सभी बयान हो चुके हैं।

(२) शरदचन्द्रभाई, शिवाभाई, शिल्पी बहन, प्रकाशभाई और पूज्य बापूजी के वकीलों द्वारा लड़की से जिरह पूरा हो चुका है।

(३) सर्वोच्च न्यायालय में जो याचिकाएँ लगी हैं, उनकी सुनवाई की तारीख ३ जुलाई है । इनमें बापूजी की जमानत की याचिका, पॉक्सो एक्ट के अंतर्गत लड़की की आयु निर्धारण के संबंध में याचिका और लड़की की उम्र के संबंध में प्राप्त नये दस्तावेजों को मँगवाने की याचिका शामिल है।

सभी साधक हृदयपूर्वक रोज प्रार्थना करें कि ३ जुलाई को होनेवाली सुनवाई के परिणामस्वरूप पूज्य बापूजी को जमानत मिल जाय तथा हम सभीको गुरुपूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव के दर्शन हों । सभी साधक, भक्त बापूजी के आने तक दृढ़ता के साथ प्रतिदिन 'ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आओ !' का संकल्प व अधिक-से-अधिक जप करें।

वेदांत पर प्रबंध

मेरे परिचित एक सज्जन के जीवन की यह घटना है । बात सन् १९८६ की है । पूज्य बापूजी शहर के शोर-गुल से दूर पुण्यसलिला साबरमती के किनारे एकांत में एक कुटिया (मोक्ष कुटीर) में रहते थे । चारों तरफ बीहड़, ऊँची-नीची जमीन, काँटेदार झाड़ियाँ थीं ।

अधिकांश समय बापूजी परमात्म-ध्यान में निमग्न रहते थे, कुछ समय के लिए ही कुटिया से बाहर आकर भक्तों को दर्शन-सत्संग देते थे । सत्संग में पूज्यश्री वेदांत के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डालते और जिज्ञासुओं की कठिन-से-कठिन गुत्थियों को भी सरल भाषा में सुलझा देते थे । यही नहीं, किसीको भक्ति का रस चखाते तो किसीको ऐसी ध्यान की गहराइयों में ले जाते, जहाँ बड़े-बड़े योगियों को भी पहुँचने में वर्षों लग जाते हैं । कई घंटों साधक ध्यान की मस्ती में डूबे रहते ।

उस समय एक सज्जन वेदांत जैसे कठिन विषय पर पीएच.डी. कर रहे थे । उन्हें इस विषय पर प्रबंध (थीसिस) लिखना था । वे इसी संबंध में अपने कुछ प्रश्नों के समाधान हेतु बापूजी से मिलने आश्रम आये ।

आश्रम-परिसर में प्रवेश करते ही उन्हें जो अनुभव हुआ, उसका वर्णन करते हुए वे बताते थे कि ''अलौकिक दिव्यता का एहसास हुआ, मन अनोखी शांति और आनंद से भर गया । मोक्ष कुटीर के आसपास घूमते हुए मुझे विचार आया कि 'यह स्थल कितना शांत व ऊँचे आध्यात्मिक स्पंदनों से युक्त है ! प्राचीनकाल के ऋषि-मुनियों के आश्रमों के आध्यात्मिक वातावरण का जो वर्णन पढ़ने को मिलता है, वह आज प्रत्यक्ष देखने को मिल रहा है ! काश... इस वातावरण में रहने को मिल जाय तो कितना अच्छा हो ! मैं इधर ही बैठ के लिखूँगा ।'

मेरा इतना सोचना ही था कि एक आवाज सुनायी पड़ी : ''क्या सोचता है ? इधर रहने की इच्छा है तो रह जा ! तेरे जैसे जिज्ञासुओं के लिए ही तो यह आश्रम बनाया है ।'' अपनत्वभरी, हृदयस्पर्शी, ओजस्वी वाणी मोक्ष कुटीर के अंदर से आयी, जहाँ बापूजी ध्यान कर रहे थे ।

ये शब्द सुनकर मैं चौंक गया कि 'मेरे मन में जो विचार चल रहे हैं, उनको ये महात्मा कैसे जान गये ? मैंने तो किसीसे कुछ कहा नहीं, बड़ा आश्चर्य है !' बस, फिर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि ये कोई साधारण संत नहीं, कोई सिद्ध महापुरुष हैं ।''

बापूजी के सत्संग से उन सज्जन को अपने सभी प्रश्नों का हल भी मिला और दिव्य अनुभव भी हुआ, जिसका वर्णन करते हुए वे बताते थे : ''वेदांत-शास्त्रों का अध्ययन तो मैं कई वर्षों से कर रहा था लेकिन वेदांत का सार तो अब पता चला । अब मैं इन बाबा की ही शरण में रहूँगा ।'' उस नवयुवक ने नौकरी का लालच छोड़ दिया और शादी से इनकार कर दिया । घरवालों को बोल दिया : ''अब मैं ईश्वरप्राप्ति करूँगा । सब कुछ छोड़ वेदांत का फल पाने में लगूँगा ।''

वे सज्जन आश्रम में रहने लगे और उन्होंने बापूजी के मार्गदर्शन व सहयोग द्वारा प्रबंध लिखा, जिसके फलस्वरूप वे वेदांत में पीएच.डी. करने में सफल हुए और स्वर्ण पदक भी पाया ।

वेदांत के गूढ़ रहस्यों के साथ बापूजी के सत्संग में भक्ति, ज्ञान और कर्मयोग की त्रिवेणी का अभूतपूर्व संगम होता है । बापूजी के सान्निध्य में आनेवाले जिज्ञासुओं को उनकी योग्यता के अनुसार साधना का मार्ग मिलता है । यही कारण है कि बापूजी के मार्गदर्शन में चलनेवाले असंख्य साधकों ने बहुत कम समय में अध्यात्म की ऊँचाइयों को पाया है ।

– श्री इन्द्र सिंह राजपूत

फिजूल समय क्यों बरबाद कर रहे हो ?

कोई व्यक्ति अपने गुरु के बारे में तर्क-वितर्क कर रहा था । श्री रामकृष्ण परमहंस ने उससे कहा : ''तुम फिजूल समय क्यों बरबाद कर रहे हो ? तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब ? तुम्हें मोती चाहिए तो मोती लेकर सीपी को फेंक क्यों नहीं देते ? गुरु ने जो मंत्र दिया है, उसे लेकर (अंतरात्मा में) डूब जाओ ।

कोई तुम्हारे गुरु की निंदा करता हो तो कभी मत सुनो । गुरु माता-पिता से भी बड़े हैं । यदि कोई तुम्हारे सामने तुम्हारे माता-पिता की निंदा करे तो क्या तुम सहन करोगे ? शिष्य को गुरु की निंदा कभी नहीं करनी चाहिए, न सुननी चाहिए । उसे सदा गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए ।''

अपने गुरु के प्रति, इष्ट के प्रति कितना सुदृढ़ विश्वास होना चाहिए यह बताते हुए श्री रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे : ''पत्थर हजारों साल तक पानी में पड़ा रहे तो भी उसके भीतर एक बूँद पानी नहीं घुसता परंतु मिट्टी के ढेले में पानी लगते ही वह घुल जाता है । जिसके हृदय में विश्वास का बल है, वह हजारों विघ्न-बाधाओं की परीक्षा में से गुजरकर भी हताश नहीं होता परंतु अविश्वासी व्यक्ति छोटी-सी बात से ही विचलित हो जाता है । स्वयं भगवान श्रीरामचन्द्रजी को समुद्र पार करने के लिए सेतु बाँधना पड़ा परंतु हनुमानजी केवल 'जय श्रीराम' कहकर एक ही छलाँग में अनायास समुद्र लाँघ गये । विश्वास में कितना सामर्थ्य है !''

'बाल संस्कार केन्द्र' में मनायें गुरुपूर्णिमा महोत्सव

बाल संस्कार केन्द्र के शिक्षक अपने केन्द्र में गुरुपूर्णिमा महोत्सव अवश्य मनायें । बच्चों से वार्तालाप करते हुए ऐसे प्रश्न पूछें जिनसे उनके मन में गुरुपूनम के बारे में जानने की जिज्ञासा जगे । जैसे

* गुरुपूनम क्यों मनायी जाती है ?
* सद्गुरु की आवश्यकता क्यों है ?
* ५ ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु और उनके सत्शिष्यों के नाम बताओ ?
* गुरुपूनम पर गुरुदेव का पूजन करने से क्या-क्या लाभ होते हैं ?
* वह कौन-सा बल है जिससे शिष्य के असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं ?
* गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुदेव के दर्शन-सत्संग व सान्निध्य से क्या लाभ होता है ?

इस दिन विद्यार्थियों से गुरुदेव का पूजन, उनकी परिक्रमा आदि करवायें । मानसिक पूजन की महिमा बताकर बच्चों को मानसिक पूजन का लाभ भी दिलवायें । हो सके तो गुरुपूनम के दिन बच्चों को अपने नजदीकी आश्रम में अवश्य ले जायें ।

'हमारे पूज्य गुरुदेव संत श्री आशारामजी बापू का स्वास्थ्य, आयु, आरोग्य, यश, कीर्ति खूब-खूब बढ़े' - ऐसा संकल्प करके अपने किसी भी इष्टमंत्र का जप करवायें ।

साखियाँ

(१) गुरु देवो गुरु देवता, गुरु बिन घोर अंधार ।
जे जन गुरु शरण गये, सो उतरे भव पार ॥

शिष्यों के प्रकार

– पूज्य बापूजी

सत्शिष्यों के पास चाहे ऐहिक सुख-सुविधाओं के ढेर हों, चाहे अनेकों प्रतिकूलताएँ हों फिर भी वे सदा मुस्कराते हुए जीवन बिताते हैं, मुस्कराते हुए ईश्वर के रास्ते जाते हैं।

उत्तम साधक लांछन सहते हैं फिर भी धन्यवाद देते हैं, कभी फरियाद नहीं करते। मध्यम साधक फरियाद भी करते हैं और धन्यवाद भी देते हैं और कनिष्ठ साधक तर्क-कुतर्क करके गुरु को तौलते रहते हैं। कनिष्ठ व्यक्ति को, श्रद्धाहीन को तो गुरु एक मनुष्य दिखते हैं, भगवान की मूर्ति पत्थर दिखती है और तीर्थ जलाशय दिखते हैं। परंतु श्रद्धालु को जलाशय तीर्थरूप दिखता है, मूर्ति में भगवान दिखते हैं और गुरु साक्षात् परब्रह्म परमात्मा दिखते हैं।

गुरु और शिष्य के बीच जो दैवी संबंध होता है उसे दुनियादार क्या जानें ? सच्चे शिष्य सद्गुरु के चरणों में मिट जाते हैं और सच्चे सद्गुरु निगाहों से ही शिष्य के हृदय में बरस जाते हैं।

सुख-शांति व बरकत के उपाय

* तुलसी को रोज जल चढ़ायें तथा गाय के घी का दीपक जलायें।

* सुबह बिल्वपत्र पर सफेद चंदन का तिलक लगाकर संकल्प करके शिवलिंग पर अर्पित करें तथा हृदयपूर्वक प्रार्थना करें।

कैसे बदलें दुर्भाग्य को सौभाग्य में ?

* बरगद के पत्ते पर गुरुपुष्य या रविपुष्य योग में हल्दी से स्वस्तिक बनाकर घर में रखें।

* नीम, अशोक या आम की पत्तियोंसहित छोटी-छोटी टहनियाँ मुख्य दरवाजे पर लटकायें।

* सप्ताह में एक दिन घर की साफ-सफाई करने के बाद एक लोटा पानी में थोड़ी शक्कर और दूध डालकर कुश से उसका छिड़काव पूरे घर में करें। अंत में बचे हुए पानी को दरवाजे की दोनों तरफ थोड़ा-थोड़ा डाल दें।

ये प्रयोग आम आदमी के लिए हैं। गुरुभक्त तो गुरु के ज्ञान और मंत्र से ही मौज और मस्ती में रहता है।

ट्विटर पर देश-विदेश की गणमान्य हस्तियाँ कर रही हैं पूज्य बापूजी का समर्थन

पूरा संत-समाज परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के साथ है।

– हिन्दू महासभा, हिन्दू जागृति (संस्थान)

संत-समाज विशाल रूप से संत आशारामजी बापू के समर्थन में आया है क्योंकि वे जानते हैं कि बापूजी के ऊपर जो केस किया है, वह बोगस है। **– सत्या कानुकुंतला, लंदन(यूके)**

संत आशारामजी बापू भारत के ही नहीं पूरे विश्व के हैं। उनकी रक्षा करनी चाहिए। पूर्व की संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए।

जब मेडिकल रिपोर्ट से कोई अपराध उजागर नहीं होता तो इससे एकदम स्पष्ट है कि आशारामजी बापू के खिलाफ यह एक बहुत बड़ा षड्यंत्र है। **– डॉ. विष्णु हरि, नेपाल संसद में विदेशी नीति मसौदा समिति के सदस्य जापान में नेपाल के भूतपूर्व राजदूत कंट्री डायरेक्टर, सपना, नेपाल**

भारत के नागरिकों द्वारा निकाली जा रहीं अविरत प्रदर्शन रैलियाँ - आशारामजी बापू के प्रति उनका जोरदार समर्थन और दर्ज मामले की असत्यता को प्रकट करती हैं।

– जलपा मितरा, बोस्टन (यूएसए)

राष्ट्र-धरोहर गंगा को बचाने की दिशा में एक प्रयास

गौ, गीता और गंगा भारत की आत्मा हैं। गौ और गंगा के संरक्षण के लिए तथा समाज को गीता के सर्वहितकारी ज्ञान से लाभान्वित करने के लिए पूज्य बापूजी वर्षों से प्रयत्नशील रहे हैं। बापूजी कहते हैं : ''गंगा, गीता और गाय को महत्त्व देने से ही देश का सर्वांगीण विकास होगा। ये तीनों भारत की संस्कृति की धरोहर हैं।''

गंगा के साथ करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है लेकिन इसके बावजूद आज हमारे देश में अनगिनत कारखानों से निकलनेवाले अनुपचारित अपशिष्टों तथा लोगों में गंगा की साफ-सफाई के प्रति जो जागरूकता की कमी है, इन कारणों से कई स्थानों पर गंगा का पवित्र जल पीना तो दूर स्नान करने के भी योग्य नहीं रहा है।

समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए गंगा जयंती के पावन अवसर पर नोयडा (उ.प्र.) के साधकों द्वारा विशाल संकीर्तन यात्रा निकाल के शहरवासियों में जागरूकता लाने का सफल प्रयास किया गया। यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर शीतल शरबत बाँटा गया एवं पूर्णाहुति के बाद भंडारे का भी आयोजन हुआ। होशियारपुर (पंजाब) में शीतल शरबत बाँटकर एवं गंगा माता के जयकारे लगाकर गंगा जयंती मनायी गयी।

इसके अलावा देशभर में जो विभिन्न समाजसेवी संगठन, संत-महात्मा और जनता के प्रतिनिधि राष्ट्र की धरोहर गंगा को बचाने के भगीरथ कार्य में जुटे हुए हैं, सभी साधुवाद के पात्र हैं।

शास्त्र वचनामृत

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्त्वा ह्यनृणी भवेत् ॥

'गुरु शिष्य को ज्ञान का एक भी अक्षर दें तो उसके बदले में देने योग्य ऐसा कोई द्रव्य पृथ्वी पर नहीं है, जिसे देकर शिष्य गुरु के ऋण से मुक्त हो सके।'

(अत्रि संहिता : ९)

बथुआ खायें रोग भगायें

बथुआ रुचिकर, पाचक, रक्तशोधक, दर्दनाशक, त्रिदोषशामक, शीतवीर्य तथा बल एवं शुक्राणु वर्धक है । वनस्पति विशेषज्ञों के अनुसार बथुए में लौह, सोना, क्षार, पारा, कैरोटीन, कैल्शियम,फॉस्फोरस, पोटेशियम, प्रोटीन, वसा तथा विटामिन 'सी' व 'बी-२' पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं । बथुआ नेत्र, मूत्र व पेट संबंधी विकारों में विशेष लाभदायी है । बथुए की सब्जी, रस या उसका उबाला हुआ पानी पीने से पेट, यकृत, तिल्ली व गुर्दे (किडनी) से संबंधित अनेक प्रकार के रोग, बवासीर व पथरी के रोग में लाभ होता है।

बथुए का साग

बथुए का साग बनाते समय कम-से-कम मसाले व घी-तेल का प्रयोग करना चाहिए । गाय के घी व जीरे का छौंक लगाकर सेंधा नमक डाल के बनाया गया बथुए का साग खाने से नेत्रज्योति बढ़ती है । आँखों की लाली व सूजन उतर जाती है।

यह आमाशय को ताकत देता है । इससे कब्ज दूर होता है और वायुगोला व सिरदर्द भी मिट जाता है। शरीर में शक्ति आती है व स्फूर्ति बनी रहती है।

कच्चे रस के प्रयोग

(१) बथुए के १०० मि.ली. रस में स्वादानुसार नमक मिला के रोज दो बार १० दिन तक पीने से पेट के कृमि मर जाते हैं।

(२) एक गिलास रस में शहद मिलाकर रोज पीने से पथरी टूटकर निकल जाती है। इससे यकृत की क्रियाशीलता भी बढ़ती है।

(३) मूत्राशय, गुर्दे (किडनी) और पेशाब से संबंधित रोगों में बथुए का रस पीने से लाभ होता है।

बथुए के उबाले पानी का प्रयोग

(१) ५० ग्राम बथुआ १ गिलास पानी में उबालकर छान के पीने से स्त्रियों को मासिक धर्म खुलकर आता है।

(२) बथुए के पानी से दर्दवाले घुटने का सेंक करें और बथुए की सब्जी खायें। इससे कुछ सप्ताह में ही घुटनों का दर्द ठीक हो जाता है।

(पृष्ठ १७ का शेष)

रूप से चिद्रूप ही बनता है। अतः गुरु और ब्रह्म भिन्न नहीं हैं। इस संबंध में उपनिषद् में प्रमाण है। जैसे यदि घी की गुड़िया बनायी जाय तो वह घी से भिन्न न होकर घी के रूप में ही आकारित होती है, उसी प्रकार सद्गुरु की मूर्ति भी चिद्रूप में ही साकार हुई है अर्थात् ब्रह्मस्वरूप ही है। चित्सुख का पुतला व सच्चिदानंद का उत्सव व लीला प्रत्यक्ष आँखों से देखने के लिए उन्होंने लीलाविग्रह धारण किया है ।उनकी भेंट होने के लिए करोड़ों सद्भाग्य अपनी झोली में होने चाहिए

सद्गुरु जिधर भी दृष्टि करते हैं उधर सुख की ही सृष्टि उत्पन्न होती है। वे जहाँ कहते हैं वहाँ महाबोध स्वानंद से रहता है। उन सद्गुरु के चरणकमल दिखायी देते ही भूख-प्यास तत्काल नष्ट हो जाती है, कोई कल्पना तो उठ ही नहीं सकती। सारांश यह है कि गुरु के चरणों में निजसुख निवास करता है। **(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १०)**

बेसहारों के सहारा हैं बापूजी

सन् २००३ में एक सड़क दुर्घटना में मेरे पिताजी का स्वर्गवास हो गया था, जिस कारण मैं मानसिक तनाव की शिकार हो गयी । पढ़ाई-लिखाई से तो मेरा मन एकदम उचट गया था, मन में बार-बार आत्महत्या के विचार भी आने लगे थे । सदमे से उबारने के लिए घरवालों ने जितने भी उपाय किये, सारे नाकाम रहे ।

ऐसे समय में मुझे बापूजीरूपी सच्चे पिता का सहारा मिला । २००६ में मैंने पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा ले ली । दीक्षा के बाद मेरा पूरा जीवन ही बदल गया । नियमित मंत्रजप से मेरा मनोबल, आध्यात्मिक बल बढ़ने लगा और बुद्धि का विकास होने लगा । फलतः मैं २००७ में बी.एससी. इकोनोमिक्स की परीक्षा में गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय (जालंधर) में अव्वल रही और गोल्ड मेडल हासिल किया । वर्तमान में मैं जालंधर में एक पब्लिकेशन में एडिटर तथा लेखिका के रूप में कार्यरत हूँ । बापूजी की कृपा से ही यह सब सम्भव हो पाया है ।

मेरे जैसे असंख्य लोगों को सहारा देनेवाले बापूजी किसीका अहित सोच ही नहीं सकते, करने की बात तो दूर है । जो लोग साजिशकर्ताओं के मोहरा बने लोगों को खड़ा करके बापूजी के बारे में कुछ-का-कुछ बोलते हैं, उन्हें उन करोड़ों महिलाओं की बात भी समाज तक पहुँचानी चाहिए जिनका जीवन पूज्य बापूजी की कृपा से सुखमय-शांतिमय हो गया है । बापूजी पर लगाये जा रहे आरोप झूठे व बेबुनियाद हैं । बापूजी एकदम निर्दोष हैं । **– जीनू वाधवा, जालंधर (पंजाब)**

सरल प्रयोग

* वर्षाऋतुजन्य व्याधियों से रक्षा व रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने हेतु गोमूत्र सर्वोपरि है । सूर्योदय से पूर्व ४० से ५० मि.ली. ताजा गोमूत्र कपड़े से ७ बार छानकर पीने से अथवा २५ से ३० मि.ली. गोझरण अर्क पानी में मिलाकर पीने से शरीर के सभी अंगों की शुद्धि होकर ताजगी, स्फूर्ति व कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

* दूध में सोंठ चूर्ण मिलाकर सेवन करने से हृदयगत पीड़ा का नाश होता है।

* त्रिमधुर (शर्करा, गुड़ व शहद) में डुबोई हुई दूर्वा का गायत्री मंत्र से हवन करने पर मनुष्य सब रोगों से छूट जाता है।

(अग्नि पुराण : २८०.५)

* गिलोय अत्यंत वीर्यप्रद है । इसका क्वाथ (काढ़ा) पीने से अत्यंत असाध्य वातरोग भी दूर होता है । इसके स्वरस, कल्क, चूर्ण या क्वाथ का दीर्घकाल तक सेवन करने से रोगी वातरक्त रोग से छुटकारा पा जाता है।

* गिलोय के क्वाथ और कल्क से सिद्ध घृत जीर्णज्वर का विनाशक है।

आत्महत्या महापाप

चाहे कितनी ही आफतें आ जायें, कितना ही दुःख हो जाय, कितना ही अपमान हो जाय लेकिन आत्महत्या कभी नहीं करनी चाहिए । आत्महत्या दुर्बलता, हीन विचार व कायरता की पराकाष्ठा है । हीन विचार आते ही हरि ॐ... ॐ... ॐ... का पवित्र गुंजन १०-१५ मिनट तक जोर से करें । १०-१५ श्वास जोर से मुँह से छोड़ें । आश्रम से प्रकाशित 'जीवन रसायन' पुस्तक को साथ में रखें तथा दिन में थोड़ा-थोड़ा पढ़ा करें । इससे समस्त दुर्बलताओं को कुचलने तथा महान बनने में मदद मिलेगी । पहले के किये हुए कर्मों के फलस्वरूप जो दुःखदायी परिस्थिति आनेवाली होगी वह तो आयेगी ही ।

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥

'कोई भी कर्म सौ करोड़ कल्पों में भी बिना भोगे नष्ट नहीं होता । अपने किये हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है ।' **(नारद पुराण, पूर्व भाग : ३१.७०)**

आत्महत्या करके भी कोई कर्मफल से बच नहीं सकता है, उलटा आत्महत्या का एक नया पापकर्म हो जायेगा । परंतु अगर हम दुःखदायी परिस्थिति को सहन कर लेंगे तो पुराने पाप नष्ट होंगे और हम शुद्ध होंगे । कोई भी परिस्थिति सदा रहनेवाली नहीं है । सुख भी सदा नहीं रहता तो दुःख भी सदा नहीं रहता है । सूर्य के उदय होने के बाद अस्त होना और अस्त होने के बाद उदय होना यह प्रकृति का नियम है । अतः दुःखदायी परिस्थिति के आने पर घबराना नहीं चाहिए ।

'स्कंद पुराण' के काशी खंड, पूर्वार्ध (१२.१२,१३) में आता है : 'आत्महत्यारे घोर नरकों में जाते हैं और हजारों नरक-यातनाएँ भोगकर फिर देहाती सूअरों की योनि में जन्म लेते हैं । इसलिए समझदार मनुष्य को कभी भूलकर भी आत्महत्या नहीं करनी चाहिए । आत्महत्यारों का न तो इस लोक में और न परलोक में ही कल्याण होता है ।'

आत्महत्या के विचारों को भगाने की युक्ति बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''आत्महत्या करना भोगी और कायर मन की पहचान है । सत्कर्म, सद्गुरुओं का सान्निध्य-सेवन और आत्मसाक्षात्कार करके मुक्त होना यह साधक, भक्त और योगी मन की पहचान है । आत्महत्या बड़ा भारी पाप है । इसे करनेवाला कुदरत के साथ भी टक्कर लेता है, ईश्वर के साथ भी टक्कर लेता है, समाज के साथ भी टक्कर लेता है । तीनों का वह अपराधी है । इसीलिए आत्महत्या का विचार आये तो तुरंत भगवान को कहो कि 'हे प्रभु ! तू अमर है । तू शाश्वत है और मेरा आत्मा भी शाश्वत है फिर यह आत्महत्या का नीच विचार मेरा मन क्यों करता है ? मेरे नीच विचारों को मैं नहीं निकाल पा रहा हूँ, तू ही निकाल । मैं तेरा हूँ, तू मेरा है न ! और वास्तव में देखा जाय तो नीच विचार मेरे नहीं हैं, मेरे मन के हैं; मन मेरे को नीच विचार कराता है । लेकिन तू तो ऊँचे-से-ऊँचा है । तू मेरा है न ! इन हीन विचारों को मार भगाओ तुम । भगाओगे न ! भगाओगे न ! बोलो न... बोलो न !' इस प्रकार करके भगवान को आलिंगन कर लो । आत्महत्या के विचार गायब हो जायेंगे । खुशियाँ मिल जायेंगी ।''

वेद उदधि बिन-गुरु लागै लौन समान ।
बादर गुरु-मुख द्वार व्है अमृत से अधिकान ॥

ङ्गुरु के बिना वेदरूपी समुद्र का पान नमक के समान खारा लगता है, परंतु वही जल अगर गुरुमुखरूपी बादल से आये तो अमृत से भी अधिक मीठा लगता है ।'

ऐसे महापुरुषों की तुलना किससे करोगे ?

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयान्मुक्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥

संसारी लोग जिनसे अपनी किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना देखते हैं या अपने आचार-विचार से प्रतिकूल अनुभव करते हैं, उनसे उद्विग्न हो जाते हैं। मुमुक्षु लोग भी लोगों को ईर्ष्या, द्वेष आदि से दबे तथा संसार में आसक्त देखकर उनसे उद्विग्न हो जाते हैं। परंतु जीवन्मुक्त महापुरुष किसीके पराये नहीं, सबके अपने होते हैं। उनसे किसीके अनिष्ट और प्रतिकूलता की आशंका ही नहीं रहती। फिर उनसे कोई क्यों घबराने लगा ? दूसरे लोगों की संसार-आसक्ति आदि देखने से उनकी साधना में बाधा तो पड़ती ही नहीं क्योंकि उनकी साधना सहज है, कृत्रिम नहीं है कि दूसरों के संसर्ग से या विघ्न डालने से वह रुक जायेगी। इससे वे किसीसे घबराते नहीं हैं। उन्हें सब कुछ प्राप्त ही है, इसलिए किसी वस्तु की प्राप्ति से वे हर्षित नहीं होते। उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं। इसलिए वे किसीसे अमर्ष (ईर्ष्या) नहीं करते। द्वैत में ही भय है, दूसरों से ही भयभीत होना पड़ता है। जीवन्मुक्त पुरुष के लिए कोई दूसरा है ही नहीं, फिर वे भयभीत किससे हों ? वे सर्वदा आत्मरत, आत्मतृप्त और आत्मतुष्ट ही रहते हैं।

शान्तसंसारकलनः कलावानपि निष्कलः ।
यः सचित्तोऽपि निश्चित्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ॥

संसारी लोग 'यह शत्रु है, यह मित्र है, यह उदासीन है; यह सम्मान है, यह अपमान है' इत्यादि नानाविध विकल्पों के कारण जला करते हैं। परंतु जीवन्मुक्त पुरुष में ये सब विकल्प होते ही नहीं, वे स्वभावतः शांत रहते हैं। वे ६४ कलाओं से युक्त होने पर भी उनके अभिमान और व्यवहार के अभाव के कारण कलाहीन ही रहते हैं अथवा इन शरीर, प्राण आदि अभिव्यक्तियों से, खंडों से युक्त दिखने पर भी वे इनसे रहित अर्थात् अव्यक्त ही हैं। हम लोगों की दृष्टि में वे चित्तवाले प्रतीत होते हैं परंतु वास्तव में वृत्तियों का उदय न होने से वे निश्चित्त अर्थात् चित्तरहित ही हैं। तब निश्चिंत तो वे होंगे ही।

यः समस्तार्थजातेषु व्यवहार्य्यपि शीतलः ।
परार्थेष्विव पूर्णात्मा स जीवन्मुक्त उच्यते ॥

जैसे संसारी लोग उत्सव आदि के अवसर पर दूसरों के घर स्वयं जाकर उनकी प्रसन्नता के लिए अनेक प्रकार के काम करने पर भी लाभ, हानि, हर्ष, विषाद आदि रूप विकारों से अभिभूत नहीं होते, उसी प्रकार यद्यपि जीवन्मुक्त महापुरुष की दृष्टि में कोई पराया नहीं है, तो भी समस्त व्यवहारों को करते हुए भी वे उन विकारों से मुक्त रहते हैं। इनका हृदय सर्वथा शीतल रहता है। यह बात नहीं कि वे केवल विघ्न-बाधाओं के संताप से मुक्त रहने के कारण ही शीतल रहते हों, बल्कि निरंतर अपने एकरस परिपूर्ण आत्मतत्त्व में परिनिष्ठित रहने के कारण ही ऐसा होता है।

ऐसे आत्मनिष्ठ महापुरुष को जब तक उनका शरीर दिखता है, हम लोग जीवन्मुक्त कहते हैं और उनकी शरण ग्रहण करके परम कल्याण प्राप्त करते हैं । जब उनका शरीरपात हो जाता है, तब वे विदेहमुक्त हो गये, ऐसा कहा जाता है । उनके संबंध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

स्वयं का शरीर कारावास में हो फिर भी वे ब्रह्मभाव में ही रहते हैं। देश नहीं, विश्व के कई कोनों में भक्तों की भावपूर्ति करना, प्रकट होना उनकी सहज सत्ता में होता रहता है। 'अष्टावक्र गीता' में आता है : **तस्य तुलना केन जायते ।** ऐसे महापुरुषों की तुलना किससे करोगे ?

धनभागी हैं वे लोग जिन्हें हयात, ब्रह्मस्वरूप, जीवन्मुक्त महापुरुष मिलते हैं और उनमें श्रद्धा टिकती है। जो मनमाने धर्म-कर्म, मजहब में लगे हैं, उनकी अपेक्षा जीवन्मुक्त महापुरुष के शिष्य शीघ्र, शीघ्रतम अनुभूति, आनंद और समता से परिपूर्ण होने लगते हैं।

ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ।
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ।

(गुरुवाणी)

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह ।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह ॥

धन्य हैं उनमें श्रद्धा रखनेवाले ! भगवान शिव ने ऐसे भक्तों को धन्यवाद दिया है :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

'जिसके अंदर गुरुभक्ति हो उसकी माता धन्य है, उसका पिता धन्य है, उसका वंश धन्य है, उसके वंश में जन्म लेनेवाले धन्य हैं, समग्र धरती माता धन्य है।'

संत वाणी

जेते जीव सुकृत करैं, इहि सारे संसार।
तेते रज्जब ज्ञान सुन, साधुन के उपकार ॥
जो प्राणी रुचि से गहै, उर अंतर गुरु बैन।
जन रज्जब युग युग सुखी, सदा सु पावे चैन ॥

'इस सम्पूर्ण संसार में जितने भी प्राणी पुण्यकर्म करते हैं, वे सभी (किसी-न-किसी प्रकार से) संतों का ज्ञानोपदेश सुनकर ही करते हैं। अतः संसार में जो कुछ भी अच्छापन है वह सब संतों का ही उपकार है।

जो प्राणी गुरुवचनों को प्रेमपूर्वक हृदय में धारण करता है, हे रज्जब ! वह सदा के लिए, अनंत काल तक सुख-चैन पाता है।'

– संत रज्जबजी

ॐ पूज्य बापूजी व पवनाहारी बाबा ॐ

एक बार पूज्य बापूजी ने अपने साधनाकाल के मधुर संस्मरणों को याद करते हुए सत्संग में बताया कि ''एक ऐसे साधु से मैं मिला था, जो एक पेड़ पर ही रहते थे । उन्होंने हरिद्वार में सप्तसरोवर की झाड़ियों में एक पेड़ पर १५-२० फीट ऊँची दो डालियों के बीच छोटी-सी कुटिया बनायी थी । उसमें ही वे हवा पीकर रहते थे। पानी भी गंगाजल ही पीते होंगे थोड़ा-बहुत । इसलिए लोग उन्हें पवनाहारी बाबा के नाम से पहचानते थे।

काकमुद्रा के अभ्यास से वायु पीकर भी रहा जा सकता है। उसमें जीभ की नोक गोल घुमा दी जाती है कौए की चोंच की नाईं। फिर घूँट भर-भर के हवा पी जाती है तो भूख-प्यास शांत हो जाती है। यदि इस मुद्रा का रोज अभ्यास करें तो वर्षों तक जी सकते हैं। मेरे गुरुजी जानते थे। मैंने भी थोड़ा-बहुत गुरुजी से जाना है लेकिन मैंने इसका उपयोग नहीं किया।

एक बार मेरे मित्रसंत नारायण बापू भी उनसे (पवनाहारी बाबा से) मिलने गये थे। हमें पता चला तो हम भी गये। हमने कहा : ''महाराज ! दर्शन दो, दर्शन दो । दूर से आया हूँ ।'' ऐसा २-५ मिनट बोलकर २०-३० मिनट इंतजार किया । फिर से आवाज लगाकर देखा परंतु महाराज नीचे उतरे ही नहीं।

दूसरे दिन सुबह हमने नियम करते-करते सोचा कि 'आज फिर से उन्हीं महाराज के पास जायेंगे ।' अनुरोध करके देख लिया पर वे तो आये नहीं। फिर हमने सोचा, 'अब मनोबल का उपयोग करना पड़ेगा ।' हमने उनकी कुटीर के सामने देखा और संकल्प किया कि 'जल्दी नीचे उतर जायें । ॐ... ॐ... ॐ...' तुरंत अंदर से आवाज आयी : 'ॐ...' फिर तो वे साधु फटाक्-से नीचे आकर मेरे सामने बैठ गये। वे १३६ साल के थे, बिल्कुल पक्का याद है मुझे। हमारी बातचीत भी हुई। हमने कहा : ''बाबा ! आपकी नेत्रज्योति कमजोर है।''

बोले : ''हाँ, ऐसा है।'' तो मैंने डॉक्टर बुलाकर थोड़ी सेवा करवा दी।''

देश-विदेश में हुए 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' तथा 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों' की कुछ झलकियाँ

कैलिफोर्निया (यूएसए)

रजोकरी-दिल्ली

बाड़मेर (राज.)

तिल्दा, जि. रायपुर (छ.ग.)

पटियाला (पंजाब)

जिंद (हरि.)

काशीपुर (उत्तराखंड)

भिवानी (हरि.)

हैदराबाद

जबलपुर (म.प्र.)

भावनगर (गुज.)

महासमुंद (छ.ग.)

औरंगाबाद (महा.) में अनुष्ठान

कोपरखैरणे, जि. नवी मुंबई

वापी (गुज.)

बड़ौदा (गुज.)

बालासोर (ओड़िशा)

नाभा (पंजाब)

बस्तर (छ.ग.)

अनगुल (ओड़िशा)

दादर-मुंबई

राजकोट (गुज.)

कैथल (हरि.)

सम्बलपुर (ओड़िशा)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

देशभर में सतत चल रही शीतल शरबत व छाछ वितरण सेवाओं की एक झलक

भीलवाड़ा (राज.)

बाड़मेर (राज.)

अम्बाला (हरि.)

हैदराबाद

जंतर-मंतर, दिल्ली

प्रयाग

भावनगर (गुज.)

बापूनगर-अहमदाबाद

देशभर में निकाली जा रही प्रभातफेरियों की कुछ झलकियाँ

इंदौर (म.प्र.)

फरीदाबाद (हरि.)

रायपुर (छ.ग.)

नासिक

गुड़गाँव (हरि.)

भुवनेश्वर (ओड़िशा)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

वल्लभगढ़, जि. फरीदाबाद (हरि.)

कृष्णपुर, जि. नवसारी (गुज.)

लखनऊ

अम्बाला (हरि.)

सागर (म.प्र.)

जोधपुर (राज.)

भोपाल

पौंटा साहिब (हि.प्र.)

मथुरा (उ.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।